ब्लोट की अवस्था(पूर्व, मध्य और अंतिम)

ब्लोट (Bloat)

कारण: अत्यधिक हरी दलहनी घास, अचानक आहार परिवर्तन

लक्षण: पेट फूला होना, बेचैनी, साँस लेने में कठिनाई।

रोकथाम:

- हरी घास का संतुलित उपयोग।
- अचानक फीड परिवर्तन न करें।

किसानों के लिए सुझाव:

- नियमित टीकाकरण (HS, BQ, FMD, Brucellosis, LSD)
- पशु शेड, पानी और चारे की स्वच्छता।
- रोगी पशु पृथक्करण।
- प्रजनन और दूध उत्पादन की नियमित निगरानी।
- स्थानीय पशु चिकित्सक से संपर्क रखें।
- रोगों के शुरुआती लक्षणों पर तुरंत कार्रवाई।
- सामुदायिक जागरूकता कार्यक्रम में भाग लें।
- संतुलित आहार और पोषण सुनिश्चित करें।

निष्कर्ष:

- समय पर टीकाकरण, स्वच्छता और उचित पोषण से बीमारियों से बचाव और दूध उत्पादन बढ़ता है।

स्वस्थ पशु →अधिक दूध→ अधिक आय।

जागरूक किसान = स्वस्थ पशु = सुरक्षित और लाभकारी डेयरी व्यवसाय।

संपादक:

निर्मल सिंह दहिया, निदेशक प्रसार शिक्षा

योगेन्द्र सिंह जादौन, उप–निदेशक, प्रसार शिक्षा

प्रकाशक:

प्रसार शिक्षा निदेशालय

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

Folder : PN/80/FFPF-3/2026/DEE/BASU-Patna

दुधारू पशुओं की प्रमुख बीमारियाँ एवं रोकथाम

योगेन्द्र सिंह जादौन, मृत्युंजय कुमार, प्रज्ञा भदौरिया

एवं निर्मल सिंह दहिया

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR), नई दिल्ली के फार्मर फर्स्ट प्रोग्राम के अंतर्गत प्रकाशित

प्रसार शिक्षा निदेशालय

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

दुधारू पशुओं की प्रमुख बीमारियाँ एवं रोकथाम

दुधारू पशु जैसे गाय और भैंस हमारे ग्रामीण जीवन का आधार हैं। ये न केवल दूध और डेयरी उत्पाद देते हैं, बल्कि कृषि कार्यों में सहायक भी होते हैं। पशुओं की बीमारियाँ उनके स्वास्थ्य और उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं, जिससे किसानों की आय प्रभावित होती है। इस प्रकाशन के माध्यम से हमें उन प्रमुख बीमारियों और उनकी रोकथाम के सरल उपायों के बारे में जानकारी देंगे।

परिचय:

- दुधारू पशु (गाय, भैंस) ग्रामीण जीवन का आधार होता है।
- रोगों से पशु स्वास्थ्य और दूध उत्पादन प्रभावित होता है।
- समय पर रोकथाम और उपचार से आर्थिक नुकसान कम होता है।

सामान्य प्रबंधन उपाय:

- पशु शेड की नियमित सफाई।
- स्वच्छ पानी और पोषक चारा उपलब्ध कराना।
- रोगी पशु को अलग रखना।
- टीकाकरण और स्वास्थ्य जाँच नियमित करना।
- चराई के लिए साफ एवं सुरक्षित क्षेत्र का चयन।

प्रमुख संक्रामक रोग (Bacterial & Viral)

1. एचएस – हेमौरेजिक सेप्टिसीमिया (HS – Hemorrhagic Septicemia)

कारक जीव: ***Pasteurella multocida*** **(पास्टूरिला मुलटोसिडा जीवाणु)**

लक्षण: तेज बुखार, कमजोरी, सांस लेने में कठिनाई, अचानक मृत्यु।

रोकथाम:

- टीकाकरण (6 महीने पर)।
- संक्रमित क्षेत्र में पशु अलग रखें।

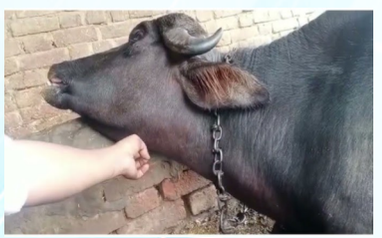

हेमौरेजिक सेप्टिसीमिया रोग से प्रभावित पशु

2. ब्लैक क्वार्टर (BQ – Black Quarter)

कारक जीव: ***Clostridium chauvoei*** **(क्लोस्ट्रीडियम चौबाई जीवाणु)**

लक्षण: अचानक बुखार, पैर में सूजन, दर्द, चलने में कठिनाई।

रोकथाम:

- वार्षिक टीकाकरण।
- संक्रमित पशु पृथक्करण।

ब्लैक क्वार्टर रोग से प्रभावित पशु

3. फूट एंड माउथ डिजीज (FMD Virus)

कारक जीव: ***Aphthovirus Picornaviridae*** **(एफ्थस विषाणु)**

लक्षण: मुंह, जीभ और खुर में छाले, बुखार, दूध में कमी।

रोकथाम:

- टीकाकरण।
- संक्रमित पशु अलग रखें।
- रोगग्रस्त क्षेत्र में पशु न ले जाएँ।

4. ब्रूसिलोसिस (Brucellosis)

कारक जीव: ***Brucella abortus*** **(ब्रूसिला जीवाणु)**

लक्षण: बार–बार गर्भपात, बांझपन, स्तनशोथ।

- **रोकथाम:**
- टीकाकरण।
- गर्भवती पशुओं की नियमित जाँच।
- संक्रमित पशु पृथक्करण।

5. लम्पी स्किन डिजीज (LSD – Lumpy Skin Disease)

कारक जीव: ***Capripox virus*** **(कैप्रीऑक्स जीवाणु)**

- **लक्षण:** शरीर पर गांठ, बुखार, स्तनशोथ, दूध में कमी।

रोकथाम:

- टीकाकरण।
- मच्छर और कीट नियंत्रण।

लम्पी रोग से प्रभावित पशु

अयन एवं पारजीविक रोग

1. थनैला (Mastitis)

कारक जीव: ***Staphylococcus aureus, Streptococcus agalactiae, E.coli*** **(स्टेफाईलोकोकस, स्ट्रेप्टोकोकस, ई कोलाई जीवाणु)**

लक्षण: दूध जमना,थनों में लालिमा, तेज दर्द, गांठ आदि का शामिल होना।

रोकथाम:

- दुग्ध पशु की स्वच्छता
- नियमित दुग्ध परीक्षण
- संक्रमित पशु अलग करना

थनैला रोग

2. बाबेसियोसिस (Babesiosis)

कारक जीव: ***Babesiabigenrina, Babesia bovis*** **(बबेसिया प्रोटोजोआ)**

लक्षण: बुखार, हेमोग्लोबिन कम, पीली त्वचा और आंखें, कमजोर पशु।

रोकथाम:

- कीट नियंत्रण (Ticks)।
- एंटीपैरासाइटिक दवा।

3. थेलेरियोसिस / रिकेट्सियल रोग (Theileriosis/Rickettsiosis)

कारक जीव: ***Theileria annulata*** **(थेलेरिया प्रोटोजोआ)**

लक्षण: बुखार, एनीमिया, कमजोर और सुस्त पशु।

रोकथाम:

- कीट नियंत्रण।
- समय पर दवा और चिकित्सकीय देखभाल।

पोषण से संबंधित रोग:

कीटोसिस (Ketosis)

कारण : उर्जा की कमी (नेगेटिव एनर्जी बैलेंस)

लक्षण: दूध में कमी, भूख कम होना, कमजोरी।

- **रोकथाम :** संतुलित आहार एवं ऊर्जा पूरक चारा देना चाहिए।

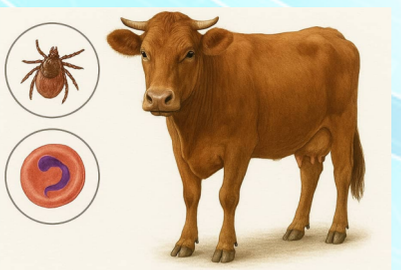

कीटोसिस प्रभावित पशु